मेदा
(Litsea chinensis)

समयबद्ध कार्यक्रम

क्र.स.	कार्य	वर्ष	माह
1	स्वस्थ्य वृक्षों का चयन	–	समयानुसार
2	स्वस्थ व रोगमुक्त वृक्षों से बीज एकत्रीकरण करना	प्रथम वर्ष	सितम्बर/अक्टूबर
3	मिस्टचैम्बर में बीज बुआई	प्रथम वर्ष	मार्च
4	अंकुरित पौधे का पॉली बैग में प्रत्यारोपण	प्रथम वर्ष	मई/जून
5	पौधों का रखरखाव	प्रथम वर्ष /द्वितीय वर्ष	जुलाई से जून
6	रोपण कार्य	/द्वितीय वर्ष	जुलाई

- **विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क करें :**
- 1– मुख्य वन संरक्षक जैव विविधता संरक्षण विकास एवं अनुसंधान, हल्द्वानी
  - फोन नं0 05946–234047,
- 2– वन संरक्षक अनुसंधान वृत्त उत्तराखण्ड हल्द्वानी
  - फोन न0 05946–235136,
- 3– वन वर्धनिक साल क्षेत्र, उत्तराखण्ड, हल्द्वानी फोन नं0 : 05946–234158
- उत्तराखण्ड वानिकी अनुसंधान शाखा, रामपुर रोड, हल्द्वानी–263139

अनुसंधान पत्रक 2/2017–18

मेदा
(Litsea chinensis)

पौध उत्पादन प्रविधि

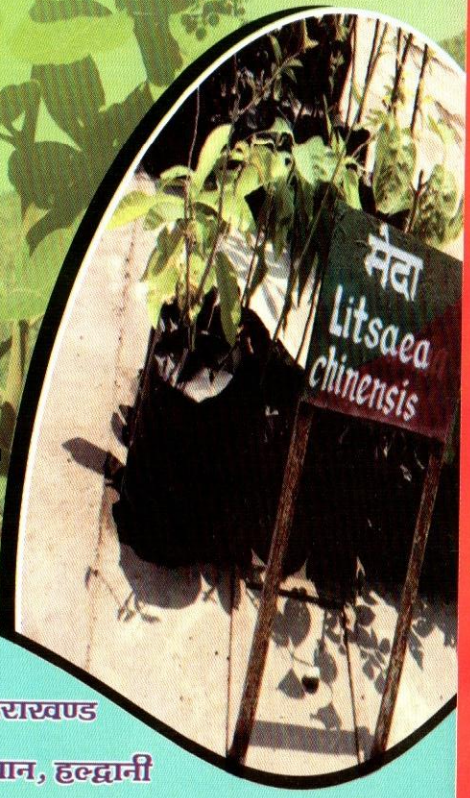

वन वर्धनिक साल क्षेत्र, हल्द्वानी उत्तराखण्ड

उत्तराखण्ड वानिकी अनुसंधान संस्थान, हल्द्वानी

वन विभाग, उत्तराखण्ड।

मेदा
(Litsea chinensis)

परिचय (Introduction)

मेदा (Litsea chinensis) लॉरेसी कुल का सदस्य हैं। यह एक मध्यम आकार का काष्ठीय तथा सदाबहार वृक्ष है, जिसकी ऊँचाई लगभग 20–25 मी0 तक होती है। यह पंजाब, खासीहिल्स, बंगाल, आसाम, दक्षिण भारत के तटीय राज्य एवं उत्तराखण्ड के भावरीय एवं मैदानी क्षेत्रों में पाया जाता है। इसका पुष्पण काल फरवरी/मार्च है तथा परिपक्व बीज सितम्बर/अक्टूबर में एकत्र किये जा सकते हैं। इसकी पत्तियां चारे के रूप में प्रयोग की जाती हैं, जो एक विशेष प्रकार की सुगन्ध लिये होती हैं। इसके बीजों को चिड़िया बड़े चाव से खाती हैं। इसकी औषधीय उपयोगिता अत्यधिक है। इस वृक्ष के छाल को स्थानीय ग्रामीण टूटी हड्डी जोड़ने के काम में प्रयोग करते हैं।

प्रवर्धन प्राविधि (Propagation Technique)

- मेदा का प्रवर्धन बीज तथा कटिंग द्वारा किया जाता है। वर्धी प्रवर्धन (कटिंग द्वारा पौध तैयार करना)
- धनात्मक वृक्ष/सी0पी0टी का चयन करें।
- शाखाओं के अग्रिम भाग की 7–10 से0मी0 कटिंग मार्च प्रथम सप्ताह से तैयार करें।
- कटिंग को आई0बी0ए0 4000 पी0पी0एम0 से उपचारित कर मिस्ट चैम्बर में वर्मीकुलाइट में रोपित करें।
- कटिंग में जड़ प्रस्फुटित होने में 2 से 4 माह का समय लगता है तथा 15% पौधों में रूटिंग प्राप्त होती है।
- जड़ युक्त पौधों का प्रत्यारोपण माह जुलाई में 12X9 इंच के पॉलीबैग में करना चाहिए ।
- प्रत्यारोपण पौध की देख–रेख लगभग 12 माह तक करनी चाहिए जिससे पौध पूरी तरह विकसित हो कर फील्ड में रोपण योग्य हो जाय ।

मेदा
(Litsea chinensis)

बीज द्वारा पौध तैयार करना

उच्च गुणवत्ता के बीज की प्राप्ति हेतु सर्वप्रथम स्वस्थ व रोगमुक्त वृक्षों का चयन कर बीज एकत्रीकरण कार्य किया जाता है। माह सितम्बर–अक्टूबर में बीज परिपक्व होने पर एकत्र कर फंगीसाइट से उपचारित कर भण्डारित करें। माह मार्च में बीज को बिना उपचारित किए मिस्टचैम्बर में जर्मिनेशन ट्रे में बालू एवं मिट्टी के पॉटिंग मिश्रण में लाइनों में बोया जाता है। माह अप्रैल में मिस्ट चैम्बर में बोये गये बीजों में अंकुरण प्रारम्भ होने लगता है तथा 30–35 दिनों में 90 प्रतिशत अंकुरण प्राप्त होता है। मिस्ट चैम्बर में तापमान 30–35 डिग्री सेंटीग्रेड तथा आर्द्रता 80 से 90 प्रतिशत सुनिश्चित करते हैं।

पौध प्रत्यारोपण

अंकुरित पौधों का प्रत्यारोपण माह मई–जून में किया जाना चाहिए जब उसमें कम से कम 3–4 पत्तियाँ आ जायें। प्रत्यारोपण करते समय अंकुरित पौधे की जड़ को सावधनीपूर्वक निकालना चाहिए। कालर से पकड़ने पर पौधे को क्षति पहुँच सकती है। 9X6 इंच के पॉलीबैग में प्रत्यारोपण शेड हाउस में करने पर अच्छा परिणाम प्राप्त होता है। पॉटिंग मीडियम मिट्टी, कम्पोस्ट, बालू (4 : 2 : 1) उपयुक्त पाया गया।

रोपण कार्य

वर्षाकाल के आरम्भ में 5 मी0 x 5 मी0 की स्पेसिंग पर रोपण किया जाना चाहिए। 2 वर्ष की पौध वृक्षारोपण हेतु उपयुक्त होती है। पौध रोपण माह जुलाई में करना उपयुक्त है।